

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये प्रथमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে প্রথমং দশকম্ ॥

ভগবন্নহিমানুর্ণনম্

সান্দ্রানন্দারবোধাত্মকমনুপমিতং কালদেশারধিভ্যাং
নির্মুক্তং নিত্যমুক্তং নিগমশতসহস্রেণ নির্ভাস্যমানম্।
অস্পষ্টং দৃষ্টমাত্রৈ পুনরুরূপুরুষার্থাত্মকং ব্রহ্ম তত্ত্বং
তত্ত্বাৱদ্ধাতি সাক্ষাদপুরুপরনপুৱে হস্ত ভাগ্যং জনানাম্ ॥ 1.1 ॥

এৱং দুৰ্লভ্যৱস্তন্যপি সুলভতযা হস্তলঙ্কে যদন্যৎ
তন্না ৱাচা ধিযা ৱা ভজতি বত জনঃ ক্ষুদ্রতৈৱ স্ফুটেযম্।
এতে তাৱদ্বযং তু স্থিৱতৱমনসা ৱিশ্বপীডাপহতৈ
নিশ্শেষাত্মানমেনং গুৱপৱনপুৱাধীশমেরাশ্রযামঃ ॥ 1.2 ॥

সত্ত্বং যত্ত্বৎ পৱাভ্যামপৱিকলনতো নিৰ্মলং তেন তাৱৎ
ভূতৈৰ্ভূতেন্দ্রিযৈস্তে ৱপুৱিতি বহুশঃ শ্রযতে ৱ্যাসৱাক্যম্।
তৎ স্বচ্ছৎৱাদ্যদচ্ছাদিতপৱসুখচিদগৰ্ভনিৰ্ভাসৱূপং
তস্মিন্ ধন্যা ৱমন্তে শ্রুতিমতিমধুৱে সুগ্ৰহে ৱিগ্ৰহে তে ॥ 1.3 ॥

নিষ্কম্পে নিত্যপূৰ্ণে নিৱৱধিপৱমানন্দপীযুষৱূপে
নিৰ্লীনানেকমুক্তাৱলিসুভগতমে নিৰ্মলব্রহ্মসিঙ্কৌ।
কল্লোলোল্লাসতুল্যং খলু ৱিমলতৱং সত্ত্বমাত্তস্তদাত্মা
কস্মান্নো নিষ্কলস্ত্বং সকল ইতি ৱচস্ত্বৎকলাস্বেৱ ভূমন্ ॥ 1.4 ॥

নিৰ্ৱ্যাপাৱোহপি নিষ্কাৱণমজ ভজসে যৎক্রিয়ামীক্ষণাখ্যাং
তেনৈৱোদেতি লীনা প্রকৃতিৱসতি কল্লাহপি কল্লাদিকালে।

तस्यास्संशुद्धमंशं कमपि तमतिरोधायकं सद्भुरूपं
स एरं धृंरा दधासि स्महिमरिडराकुंठं रैकुंठं रूपम् ॥ 1.5 ॥

तते प्रत्यग्रधाराधरललितकलाधारलीकेलिकारं
लारण्यसैकसारं सुकृति जन दृशां पूर्णपुण्यारतारम्।
लम्हीनिश्शक्लीलानिलयनममृतस्यन्दसन्दोहमन्तः
सिङ्गं सङ्गिन्तकानां रपुरनुकलये मारुतागारनाथ ॥ 1.6 ॥

कष्टा ते सृष्टिचेष्टा बहुरभरखेदारहा जीरुभाजा -
मित्येरं पूरुमालोचितमजित मया नैरुमद्याडिजाने।
नो चेज्जीराः कथं वा मधुरतरमिदं एरुद्रपुश्चिद्रसार्द्रं
नेत्रैः श्रोत्रैश्च पींरा परमरससुधाञ्जोधिपुरे रमेरन् ॥ 1.7 ॥

नम्नाणां सन्निधते सततमपि पुरस्तेरनभ्यर्थितान -
पर्यान् कामानजस्रं रितरति परमानन्दसान्द्रां गतिं च।
इत्थं निश्शेषलभ्यो निररधिक फलः पारिजातो हरे एरं
म्फुद्रं तं शक्राटीद्रममडिलषति र्यर्थमर्थिब्रुजोहयम् ॥ 1.8 ॥

कारुण्याकाममन्यं ददति खलु परे स्वात्नदस्त्रं रिशेषा -
दैश्वर्यादीशतेहन्ये जगति परजने स्वात्नोहपीश्वरस्त्रम्।
एरयुष्टैरारमन्ति प्रतिपदमधुरे चेतनाः स्फीतभाग्या -
स्त्रं चाहह्वाराम एरेत्यतुल गुणगणाधार शौरे नमस्ते ॥ 1.9 ॥

ऐश्वर्यं शक्करादीश्वररिनिधमनं रिश्वतेजोहराणां
तेजस्संहारि रीर्यं रिमलमपि यशो निस्पृहैशेचापगीतम्।
अङ्गासङ्गा सदा श्रीरखिलरिदसि न क्वापि ते सङ्गरार्ता
तद्वातागाररासिन् मुरहर भगरच्छब्दमुख्याश्रयोहसि ॥ 1.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये प्रथमं दशकं समाप्तम् ॥